Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 12 | DECEMBER 2020

लोक देवी–देवता : जनमानस की आस्था के प्रतीक

जगदीश चन्द्र गुर्जर [1]

[1] विद्यार्थी, राजस्थानी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपु. (राजस्थान)

ABSTRACT:

लोकदेवो–देवता से तात्पर्य यह कहा जा सकता हैं कि वे महापुरूष जिन्होंने अपने कार्यो तथा आत्मबल द्वारा समाज में सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना, धर्म की रक्षा एवं जन हितार्थ हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया तथा ये अपनी शक्तियों और जनहितैषी कार्यों के कारण समाज में पूजनीय हो गये। इन्होंने समाज में व्याप्त कुरूतियों को मिटाने में आजीवन कोई कसर नहीं छोड़ी। इन्हीं सब बातों के कारण इन्हें जनसामान्य द्वारा दु:खहरण करने वाले और सभी का मंगल सोचने वाले मानकर पूजा जाने लगा। इनकी प्रसिद्धि का एक और कारण इनका ग्रामीण समाज के निचले तबके में प्रचलित संस्कृति से जुड़ना रहा हैं जिससे जन–जन के मानस और स्मृति का हिस्सा बन गये।

KEYWORDS:

लोक देवी–देवता, श्रद्धा, पूजनीय, गोरक्षक, चमत्कार

राजस्थान की लोक संस्कृति में विश्वास के प्रतीकों और श्रद्धा पात्रों के रूप में लोक देवी देवताओं का अपना विशिष्ट स्थान है। लोक देवता न तो कोई राजा–महाराजा थे ना ही कोई अलौकिक प्राणी, बल्कि इसी समाज में जन्में और यहाँ की मिट्टी से जुड़े रहे, वो नैतिकता और वचनबद्धता के साथ अपना जीवन जीते हुए अपने अद्भुत कृत्यों से जन आस्था और विश्वास के प्रतीक बनें। गौ–रक्षा और जनमानस की सेवा में अपना प्राणोत्सर्ग कर दिया। इन्होंने वचन निर्वाह में अपने जीवन और परिवार को भी बाधा नहीं बनने दिया। यहाँ लोक देवताओं के साथ–साथ लोक देवीयां भी अपने अद्भुत कर्मो और चमत्कारों से जन आस्था और श्रद्धा की पात्र बनीं।

राजस्थान की लोक संस्कृति में लोक देवी–देवताओं का महत्वपूर्ण स्थान है। राजस्थान के गाँव–गाँव में इन लोक देवी–देवताओं के चबूतरे बने हुए हैं, जो आम जन की श्रद्धा के पात्र बने। राजस्थान में तरह–तरह के तीज, त्यौहार, विवाह, रात्रिजागरण के अवसर पर लोक देवी–देवताओं के गीत गाए जाते हैं। इन गीतों में इनके रूप, श्रृंगार और अलौकिक कर्मों का वर्णन मिलता है। राजस्थान मे इन लोक देवी–देवताओं के मंदिर या थान पर समयानुसार निश्चित तिथीयों पर मेले का आयोजन होता है। इन मेलों के माध्यम से प्रेम, एकता, सहयोग, भाईचारा और साम्प्रदायिक सद्भावना का रूप नजर आता है। राजस्थान में अनेक लोक देवी–देवता हुए हैं उनमें से प्रमुख लोक देवी देवताओं का वर्णन प्रस्तुत है:

- **रामदेव जी**

राजस्थान के लोक देवता में रामदेव जी बहुत प्रसिद्ध हुए जो राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश में तो पूजनोय है ही वरन् पूरे भारत में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। राजस्थान में रामदेव जी को कृष्णावतार माना जाता है। द्वारकानाथ ने अजमल जी के घर और माता मैणादे की कोख से जन्म न लेकर सीधे पालने में ही अवतार लिया। रामदेव जी ने बाल्यकाल से ही समय–समय पर अनेक चमत्कार किये जैसे रूणीचा के बोयता सेठ को समुद्र में तुफान आने पर बचाना, अपने बाल सखा को पुनर्जीवित करना, वीरमदेवजी के गाय के मरे हुए बछड़े को पुनर्जीवित करना, जंगल में भैरव राक्षस को मारना, किंवदंती अनुसार मक्का से आये पंच पीरों के अपने निजी बर्तन अपनी शक्तियों से उड़ाकर लाना आदि। रामदेव जी ने हिंदु मुस्लिम एकता पर जोर दिया इसलिये मुस्लिम समुदाय द्वारा रामसापीर के नाम से संबोधित किया जाता हैं। ये सभी की समानता में विश्वास रखते थे, चाहे वह उच्च निम्न या गरीब अमीर हो। इन्होंने दलितों को भी बराबर मान सम्मान देकर उनकी हरसम्भव मदद की। इन्हीं कारणों से जनमानस द्वारा साम्प्रदायिक एकता के प्रेरक कहा जाता हैं।

राजस्थान के रूणीचा में रामदेव जी के समाधि स्थल पर रामदेव जी का भव्य मंदिर बना हुआ है जहां इनकी पावन स्मृति में प्रति वर्ष मेला भरता हैं। ''यह तिथी हिंदु पंचांग के भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की दूज पर पड़ती हैं। इस दिन राजस्थान में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जाता हैं और रामदेवरा के मंदिर में एक अंतरप्रांतीय मेले का आयोजन होता है जिसे 'भादवा का मेला' कहते हैं।'' मेले में रामदेव जी के गीतों को गाया जाता है जिन्हें स्थानीय भाषा में **ब्यावले** कहा जाता हैं। इन गीतों में रामदेव जी की महिमा गाई जाती है। इन गीतों में दर्शाया गया है कि रामदेव जी का नाम स्मरण मात्र से ही सारे कष्ट दूर होते हैं। इन्होंने चौबीस वाणियां नामक रचना की।

इस गीतांश में गाँव की एक औरत रामदेव जी से विनती करती है।

''रामापीर ऊबी रूणेचा रे मांहि, माँगू माय (नै) बाप।
समंद सरीखो पीव'र सासरो।।
रामापीर ऊब रूणेचा रे मांहि, माँगू पूत रत्नों री जोड़।
कुल में वहवारो जाजो झूलरो।।

- **पाबूजी**

राजस्थान के लोक देवताओं में पाबूजी का भी विशिष्ट स्थान है। पाबूजी राव आसनाथ के पौत्र और धांधल जी के पुत्र थे। पाबूजी जन्म से ही चमत्कारिक शक्तियों से सम्पन्न थे। पाबूजी का जन्म एक अप्सरा के गर्भ से होता है। पाबूजी का सिंहनी बनी अप्सरा का दूध पीना भी एक चमत्कार है।

''तद पाछले पोहर रो धांधल अपछरा र मोहल गयो।
ता पछे आगे अपछरा सिंघणी हुई छै अर पाबू सहजे सिंघणी नूं चूंघै छै।''

पाबूजी वीर व अलौकिक शक्ति सम्पन्न युगपुरूष थे। इनका जीवन संघर्षों से पूर्ण रहा एवं ग्रामीण अंचलों में ये गौरक्षक एवं ऊंटों के देवता के रूप में पूजे जाते हैं। राजस्थान के फलौदी के पास कोलूगढ़ में पाबूजी के मंदिर पर बड़ा भारी मेला भरता है। मारवाड़ में पाबूजी राठौड़ की विशेष मान्यता है। पाबूजी के लोकगीत भी राजस्थान में प्रचलित है। इन गीतों में पाबूजी की वीरता, गोरक्षा, वचन पालनता और उनकी पत्नी सोढ़ी का विरह वर्णन मिलता है।

- **गोगाजी**

राजस्थान के लोक देवता में गोगाजी जाहर पीर के नाम से प्रसिद्ध है। जो गोरक्षक के साथ–साथ वीरता, स्वाभिमान और मान–मर्यादा के प्रतीक माने जाते हैं। गोगाजी का जन्म बीकानेर राज्यान्तर्गत ददेरवा में हुआ। राजस्थान में गोगाजी नागदेव के रूप में पूजे जाते हैं। गोगाजी जब पिता के घर में जन्म लेते हैं तो उनका पालना सर्पों के फण से ढका होता है। गोगाजी एक वीर, महत्वाकांक्षी और निपूण योद्धा थे। गोगाजी ने मुस्लिम आक्रमणकारियों से युद्ध किया। जब अरजन–सरजन गोगाजी के प्रदेश की गायों को घेर लेते हैं तो गोगाजी अरजन सरजन को मार कर गायों छुड़ा लाते हैं। इस प्रकार गोगाजी वीर, पशु प्रेमी, साहसी, स्वाभिमानी संत सिद्ध पुरूष के रूप में राजस्थान में पूज्य हैं। गोगामेडी राजस्थान में हनुमानगढ़ जिले की नोहर तहसील के अन्तर्गत है। प्राचीन समय से ही प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला 15 से भाद्रपद शुक्ल 15 तक यहाँ वीर गोगाजी का मेला लगता है। मेले में गाए जाने वाले गोगाजी के लोक गीतों में गोगाजी की वीरता, गोरक्षक का रूप नजर आता है।

''गूगा आक बळ अकडोडिया मांय बळ कालो नाग,
गूगा बाबा गूगा की मेड़ी झिल मिळ चान्दणों,

- **तेजाजी**

राजस्थान में गोरक्षक के रूप में तेजाजी लोक देवता पूजे जाते हैं। तेजाजी का जन्म नागौर परगने के खड़ताल परगने में हुआ था। तेजाजी जाति से धोल्या जाट थे। तेजाजी चमत्कारी के साथ–साथ स्वाभीमानी, वीर, वचनपालक तथा पशु प्रेमी भी थे। राजस्थान में तेजाजी नाग देवता के रूप में भी पूजित है। साँप के काटने पर तेजाजी

की तांती बांध कर उनके स्थानक पर जागरण किया जाता है तथा जागरण में तेजाजी के गीत गाए जाते हैं।

''तेजाजी ओ, म्हाँरे आयजो धरमी पांवणा,
भले नै भादरवा री रात, धोलियाजी ओ,
थै म्हाँरे आयजो धरमी पांवणा।।

राजस्थान के पर्बतसर में तेजाजी का मेला भरता है। यहाँ परबतसर में ही तालाब के किनारे मंदिर में तेजाजी की संगमरमर की मूर्ति, स्थापित है। यह मेला भाद्र पक्ष की कृष्णा दशमी से भाद्रपक्ष की शुक्ला एकादशी तक रहता है। इस मेले में राजस्थान और गुजरात से हजारों लोग आते है।

- **मल्लीनाथ जी (मालजी)**

राजस्थान के लोक देवी–देवताओं में मल्लीनाथ जी और रूपांदे का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। मल्लीनाथ एक वीर और महत्वाकांक्षी योद्धा थे। परन्तु अपनी रूपांदे की भक्ति और चमत्कार से प्रभावित होकर सिद्धसंत बन गए। मल्लीनाथ जी ने मारवाड़ के सभी संतों को बुलाकर एक बड़ा हरी कीर्तन का आयोजन किया। इस प्रकार मल्लीनाथ जी अलौकिक चमत्कार प्राप्त सिद्ध पुरूष बन गए। मल्लीनाथ जी का मंदिर लूनी नदी के तट पर बसे तिलवाड़ा नामक स्थान पर निर्मित है। यहीं पर रावल मल्लीनाथ जी ने जीवित समाधी ली। उन्हीं की याद में यहाँ प्रतिवर्ष चैत्र कृष्णा, 11 से चेत्र शुक्ला 11 तक मेला लगता है।

''मोटा है सिध मालजी, वां केयो सोच विचार।
नेचै नेचै सब होवसी, जे तूठे किरतार।।''

- **कल्लाजी राठौड़**

राजस्थान के लोक देवताओं में कल्ला जी राठौड़ का मुख्य स्थान है। कल्लाजी वागड़ क्षेत्र के मुख्य देवता के रूप में पूजित है। कल्लाजी एक वीर, साहसी और निड़र योद्धा के रूप में जगत् प्रसिद्ध है। चित्तौड़ पर मुगल बादशाह आक्रमण करता है तो कल्लाजी अपनी सेना सहित चित्तौड़ आकर युद्ध करते हैं और अपनी मातृभूमि के लिए अंतिम क्षण तक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त करते हैं।

राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में सलम्बर से 15 किमी. आगे रूण्डेडा नामक गांव है जहाँ प्रतिवर्ष कल्ला जी के मन्दिर पर अश्विन नवरात्रि के प्रथम रविवार को उनकी याद में बड़ा भारी मेला भरता है।

''भर प्यारा अमल करे, दोहा रो रंगदार।
हुए कचेरी हिन्दवाण री, करे कल्लो जी कल्याण।

- **आवरी माता**

आवरी माता केसर कंवर का चरित्र अलौकिक चमत्कार से जुड़ा हुआ है। आवरी माता ने जनकल्याण और मानव धर्म की रक्षा के लिए अपना शरीर त्याग दिया। आवरी माता (केसर कंवर) के विवाह के अवसर पर उससे विवाह करने के लिए समय से पूर्व ही सात दुल्हें बारातियों सहित आते हैं युद्ध की विकट स्थिति को भांप कर केसर कंवर धरती में समा जाती है।

भारत में राजस्थान के ऐतिहासिक जिले चित्तौड़गढ़ की भदेसर तहसील में असावरा माता (आवरी माता) का मन्दिर है। वर्ष में दो बार चैत्र और आश्विन नवरात्रि में यहाँ मेला भरता है। इन नौ ही दिनों माताजी के मन्दिर में जागरण भी होते हैं।

''आर घर अवतार लियो जद, पिताजी में भीड़ पड़ी,
नरतन पलट पलक में ले तिरसूल खड़ी,
क्षत्राणी बण रूद्राणी माँ परचो प्रबल दियो,
राठोड़ां कुल कुंवरी, जग में नाम कियो।''

- **करणीमाता**

राजस्थान में लोक मान्यता है कि चारणों में देवी के नौ लाख साधारण (नवलाख लोवड़ियाल) एवं चौरासी असाधारण (चौरासी चारणी) अवतार हुए हैं। कहा जाता है कि करणीमाता आवड़ माता का अवतार है। करणीमाता जन्म से ही चमत्कारी थी। अपने जन्म पर बुआ के ताना मारने पर बुआ के हाथ का पंजा बांध दिया। करणीमाता न अपने पिता के सर्पदंश से मृत्यु होने पर उन्हें पुनःजीवित करके चमत्कार बताए। करणीमाता का चरित्र चमत्कारी के साथ–साथ जीवनदायिनी, जनकल्याणी तथा गौरक्षिका का भी था। राजस्थान के बीकानेर नगर से 32 किमी. दूर देशनोक में करणीमाता का स्थान है। जहाँ वर्ष में दो बार नवरात्रि मेले चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से चैत्र शुक्ला नवमी तक और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से आश्विन शुक्ला नवमी तक मेले लगते हैं।

''अम्बै जी शक्त्याँ माँहिला शक्ति बड़ा किणियागी जी
म्हारा करनल माय गढ़ देशांणा री राय शक्तियाँ
माहिला शक्ति बड़ा किणियाणी जी हो माय।।''

- **हिंगलाज माता**

हिंगलाज माता को पौराणिक देवी के रूप में माना गया है। भारत के शक्तिपीठों में हिंगलाज माता की बड़ी मान्यता है। देश के 51 शक्तिपीठों में हिंगलाज को प्रथम शक्तिपीठ माना जाता है। यह देवी सर्वशक्तिमान एवं अलौकिक है। दूसरी सभी देवियाँ हिंगलाज माता के ही पूर्ण या खण्ड़ अंश है। हिंगलाज माता ने असुरों का संहार कर इस धरा को संकट से मुक्त कराया। यह माता अनंत अनादि रूप में है। राजस्थान के जैसलमेर में हिंगलाज माता का एक मन्दिर है। नवरात्री में यहाँ मेला लगता है। राजस्थान में चारणों के गाँव में तो हर जगह हिंगलाज माता के मन्दिर या स्थानक होते हैं।

''आदि सकति तूं ईसरी, दूजां नावै दाई।
पीर तणै सिर पावई, महर करे महामाई।।''

- **आवड़ माता**

आवड़ माता को आद्य शक्ति हिंगलाज का अवतार माना गया है। आवड़ माता सात बहिनां के रूप में मामड़िया चारण के घर जन्मी थी। सातों ही बहिनें शक्ति का अवतार मानी गई हैं। सातों ही बहिनें चमत्कारी थी और अपने चमत्कार से ये जगह–जगह पूजी जाने लगी। आवड़ माता का चरित्र अवतारी, चमत्कारी और अलौकिक शक्तियों से सम्पन्न है। आवड़ माता ने उमरा सुमरा को मारकर उनके राज्य का अन्त कर वहाँ भाटियों के राज्य की स्थापना करवाई। ''आवड़ तूठी भाटिया''।

''तणु राव नां तखत दीन्हो लूणराज ने चूड़।
देवराज ने खड़ग दीनी, दूसमण कर दूर।।''

- **जीण माता**

राजस्थान के लोक देवियों में जीण माता का भी महत्वपूर्ण स्थान है। घंघराय चौहान ने

घांघु गांव बसाया था। जीण इन्हीं घंघराय की पुत्री और हर्ष की बहिन थी। जीण माता के चरित्र में स्वाभिमान का रूप झलकता है। जीण माता की भाभी द्वारा जीण माता के चरित्र पर आक्षेप करने पर स्वाभिमानी जीण घर छोड़ कर चल देती है। भाई हर्ष के मनाने पर भी नहीं लौटती है। अन्त में दोनों भाई–बहन सीकर की पहाड़ों पर तपस्या एवं जनकल्याण करते हुए अपना शरीर त्याग देते हैं। यहाँ पर ही वर्ष में दो बार नवरात्री में चैत्र एवं आश्विन के शुल्क पक्ष में मेले भरते हैं। सीकर में आयोजित होने वाला जीण माता का यह मेला अपने आप में महत्वपूर्ण है।

''हरसा वीर म्हारा रे सेलां रा भर ज्याय गैरा घाव,
जामण रा रे जाया, बोली रो घावज जुग में ना भरे।''

निष्कर्षः

लोक संस्कृति किसी भी देश की सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक अस्मिता की वास्तविक पहचान होती है। लोक देवी–देवता किसी भी लोक संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग (तत्व) होते हैं। यहाँ पर राजस्थान के लोक देवी–देवताओं का विवेचन प्रस्तुत किया गया। रामदेव जी, पाबूजी, गोगाजी, तेजाजी, मल्लीनाथ जी, कल्लाजी और आवरी माता, हिंगलाज माता, करणी माता, आवड़ माता, जीण माता का अध्ययन प्रस्तुत किया गया। लोक देवी–देवता आम जन के जीवन और आदर्शों का अंग बनकर उनका पथ प्रदर्शन बने। लोक देवी–देवताओं ने वीरता, साहस, चमत्कार, गौरक्षा, जन कल्याण कार्यों से त्याग और बलिदान से वे समाज में हमेशा के लिए पूजनीय बन गए। आम जन ने इन लोक देवी–देवताओं की स्मृति में मंदिर स्थानक आदि बनवाए।

राजस्थान की लोक संस्कृति को लोक देवी–देवताओं ने उज्जवल रूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजस्थान की लोक संस्कृति से लोक देवी–देवताओं को विलग कर दिया जाए तो यहाँ की लोक संस्कृति नैतिकताविहिन और मूल्यविहिन हो जाएगी। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि लोक देवी–देवता राजस्थान की लोक संस्कृति के सच्चे अर्थों में प्रहरी है।

REFERENCES

1. लोक देवता रामदेव जी : रामदेव आचार्य
   बीकानेर प्रौढ शिक्षा समिति, बीकानेर 1975
2. राजस्थान के लोक देवी–देवता : डॉ. महेन्द्र भानावत
   आयुक्त देवस्थान विभाग, उदयपुर 2004
3. पाबू प्रकाश : महाकवि मोड़जी आशिया कृत
   डॉ. नारायण सिंह भाटी
   राजस्थानी ग्रन्थ गाट, जोधपुर 1989
4. राजस्थान लोक संस्कृति एवं लोक देवी–देवता : डॉ. सुरेश सालवी, 2009
   पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर
5. लोक देवता जाहरवीर गोगाजी : आयुक्त देवस्थान विभाग,
   उदयपुर 2002
6. वीर कल्ला राठौड़ : घनश्याम सुखवाल
   साहित्यागाट, जयपुर, 1995
7. राजस्थानी शक्ति काव्य : भंवर सिंह सामोर
   साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1999
8. राजस्थानी लोक गाथा का अध्ययन : डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा
   साहित्य संस्थापन, राजस्थान विद्यापीठ,
   उदयपुर 1970